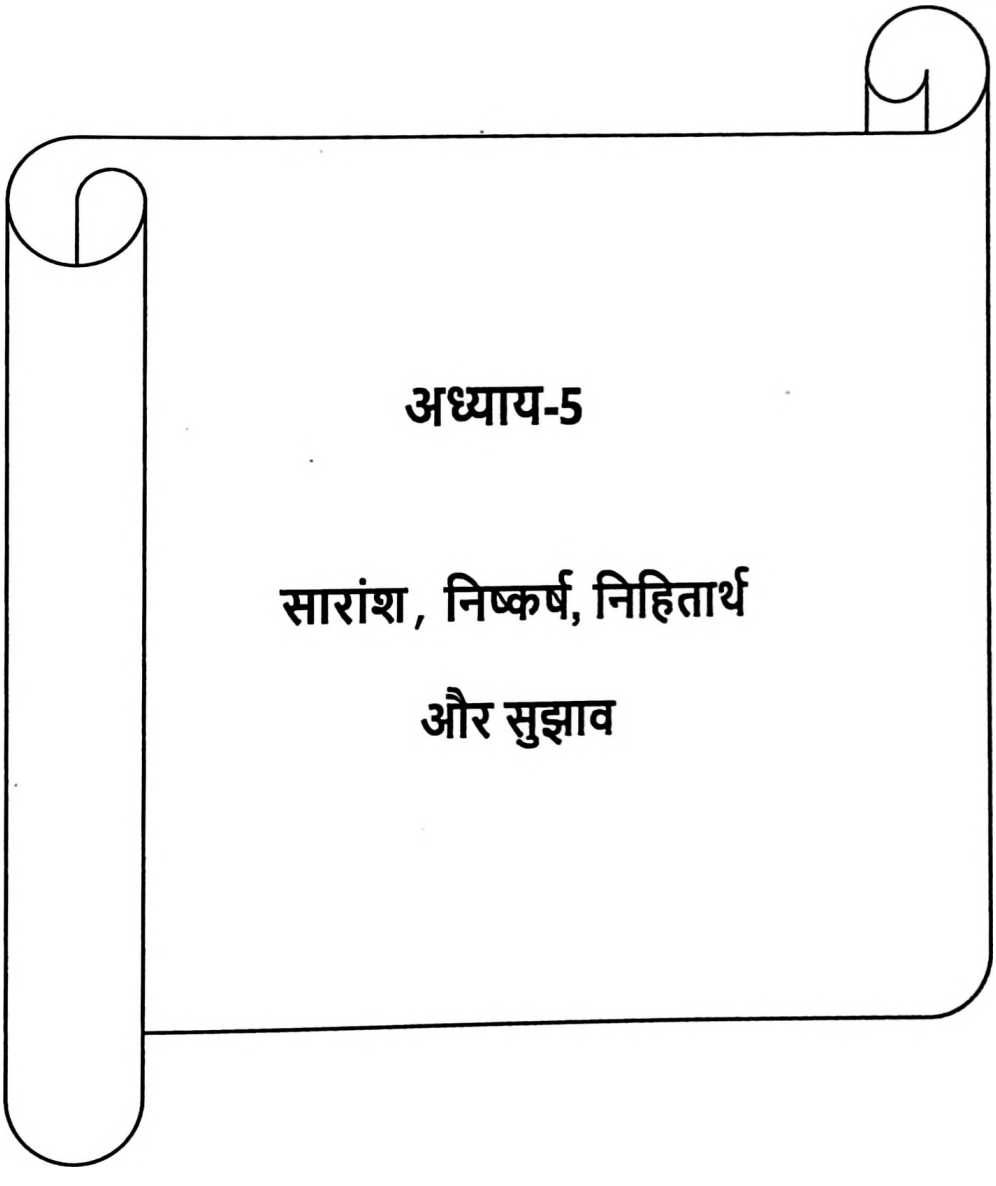

अध्याय-5

सारांश, निष्कर्ष, निहितार्थ और सुझाव

अध्याय-5

सारांश , निष्कर्ष, निहितार्थ और सुझाव

5.1 प्रस्तावना

क्रांतिकारी प्रौद्योगिकियों के साथ, वही पुरानी कक्षाएं डिजिटल में बदल गईं क्योंकि प्रौद्योगिकी ने सभी के लिए सीखने को आकर्षक और मजेदार प्रक्रिया बनाने के लिए इंटरैक्टिव दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। स्कूलों से लेकर विश्वविद्यालयों तक शैक्षिक तकनीकों को आसानी से अपनाया गया है क्योंकि यह महसूस किया है कि जब ज्ञान को दिलचस्प तरीके से छात्रों को प्रदान किया जाता है तो वह उसे समझ कर और अधिक ज्ञान का निर्माण करते हैं। एवं जिज्ञासा भी और अधिक विकसित होती है यह बिल्कुल स्पष्ट है कि प्रौद्योगिकी ने शिक्षा का चेहरा बदल दिया है।

शिक्षा में प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल हमारी शिक्षा प्रणाली में व्यापक बदलाव लाएगा एक तरफ यह छात्रों को अध्ययन के लिए प्रोत्साहित करेगा जबकि दूसरी तरफ उन्हें कई तरीकों से उनके अध्ययन में मदद करेगा। शिक्षण और सीखने के बीच की खाई को पाटने के लिए व्यक्तिगत निर्देश के लिए प्रौद्योगिकी अनिवार्य हो सकती है। प्रौद्योगिकी हमें नई चीजें सिखाती है,और हमें नए विचारों को विकसित करने और हमारी रचनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित भी करती है। हम आसानी से लोगों से जुड़ सकते हैं और अपनी समस्याओं का समाधान ढूँढ सकते हैं। ई-सामग्री विकसित करना एक नवीन पद्धति के रूप में उभर रहा है जो शिक्षार्थियों को बेहतर अधिगम के लिए अवसर प्रदान कर रहा है। ई-सामग्री को टेक्स्ट जैसे मल्टीमीडिया घटकों के एकीकरण के साथ विकसित किया है ऑडियो,वीडियो,एनीमेशन और छवि जिससे छात्रों को विभिन्न विषयों में अवधारणाओं को बेहतर समझने में आसानी से प्राप्त होती है। इस अध्ययन में छात्रों की उपलब्धि को मापने के लिए अन्वेषक ने ई सामग्री पर आधारित दृष्टिकोण का इस्तेमाल किया है। छात्रों को दो विधियों के माध्यम से पढ़ाया गया, दोनों विधियों में छात्रों की उपलब्धि तुलना की गई जिससे यह पता लगाया जा सके कौन सी विधि से सबसे बेहतर अधिगम हो सकता है एवं कौन सी विधि छात्रों को आकर्षित करती है।

5.2 सारांश

आज के छात्र प्रौद्योगिकी के साथ बड़े हो रहे हैं और उनके हर प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए वह प्रौद्योगिकी पर भरोसा करते हैं स्मार्टफोन,लैपटॉप,गैजेट्स सभी साधनों से यह पीढ़ी लैस है हमारी शिक्षण पद्धति कक्षाओं में उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पूर्ण रूप से होनी चाहिए राज्य एवं केंद्र सरकारें शिक्षकों की दक्षता के साथ-साथ हमारी शिक्षा प्रणाली को भी प्राथमिकता देती है मगर दुर्भाग्य से अपेक्षा और वास्तविकता के बीच बहुत बड़ा अंतर है इस आवश्यकता और क्रिया के बीच में एक कमी है जिसको पूरा करने से अध्ययन में उपलब्धि स्तर को अधिक से अधिक बढ़ाया जा सकता है।

ई-लर्निंग आज के समय की एक नवीनतम शैक्षिक तकनीक है,ई-लर्निंग भौगोलिक, सांस्कृतिक, लिंग जैसी सभी बाधाओं को तोड़ता है। समय के लचीलापन और ओपन लर्निंग के कारण शिक्षार्थियों को इस से ज्ञान प्राप्त करने एवं सीखने के नए द्वार मिलेंगे वर्तमान शोध अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि छात्रों का अधिगम ई-सामग्री द्वारा अधिक बढ़ा है अतः हम यह कह सकते हैं की हिंदी विषय शिक्षण में ई-सामग्री के परिणाम अत्यधिक प्रभावी रहे एवं ई-सामग्री वास्तव में छात्रों के सीखने के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन लाने के लिए एक वरदान साबित होता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि ई-सामग्री एक आधुनिक हथियार है जो शिक्षार्थियों को अपनी गति से शिक्षण सामग्री का अध्ययन करने का अवसर प्रदान करता है ताकि वे स्वयं को सीखने के अधिक प्रेरित कर सकें। कक्षा शिक्षण में बेहतर वातावरण बनाने के लिए शिक्षण की पुरानी तरीकों को इस तकनीक से बदला जा सकता है।

5.3 शोध निष्कर्ष

इस शोध से दो निष्कर्ष प्राप्त हुए पहला यह कि कक्षा सातवीं के छात्रों की सीखने की उपलब्धि पर ई-सामग्री के माध्यम से पढ़ाए जाने वाला शिक्षण हिंदी विषय में पारंपरिक पद्धति के माध्यम से पढ़ाए जाने वाले छात्रों की तुलना में अधिक था। और उपचार का महत्वपूर्ण प्रभाव रहा जब अन्वेषक ने दोनों समूहों नियंत्रण समूह की तुलना में जिसे पारंपरिक विधि से पढ़ाया एवं प्रायोगिक समूह को ई-सामग्री आधारित हिंदी विषय में शिक्षण दिया गया अधिक प्रभावी रहा।

अन्वेषक द्वारा प्रश्न पत्र में प्रश्नों की विभिन्न श्रेणियों के आधार पर भी दोनों समूहों प्रायोगिक एवं नियंत्रण का तुलनात्मक अध्ययन किया गया जिससे यह ज्ञात हो सके के प्रश्नों की विभिन्न श्रेणियों के आधार पर भी क्या कोई अंतर पाया जा सकता है नियंत्रण एवं प्रायोगिक समूह के बीच में ? इससे यह ज्ञात होता है कि कुछ श्रेणियों के प्रश्नों में नियंत्रण समूह एवं प्रायोगिक समूह का प्रदर्शन

समान रहा परंतु प्रायोगिक समूह जितना नहीं।विभिन्न प्रकार की श्रेणियों में नियंत्रण समूह की तुलना में प्रायोगिक समूह के छात्रों का प्रदर्शन अधिक प्रभावी रहा।

परिणामों की व्याख्या से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उपचार जो कि ई-सामग्री का उपयोग करके हिंदी के शिक्षण में कक्षा सातवीं को दिया गया अधिक प्रभावी था। छात्रों ने चयनित अध्याय के विषय को वितरित करते हुए सक्रिय भाग लिया।

5.4 निहितार्थ

I. अन्य विषयों के लिए इस अध्ययन में उपयोग की जाने वाली रणनीतियों का उपयोग शिक्षक के द्वारा किया जा सकता है।

II. शिक्षकों को विभिन्न विषयों के पाठ योजनाओं की ई-सामग्री विकसित करने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

III. शिक्षकों को ई-सामग्री आधारित शिक्षण के माध्यम से पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

IV. शिक्षकों को इस तरह की सामग्री का उपयोग करके धीमी गति से सीखने वाले या कम सीखने वाले छात्रों के लिए आवश्यकता अनुसार उपयोग करना चाहिए।

V. प्रभावी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के लिए शिक्षक प्रशिक्षित हो और प्राथमिक शिक्षकों के लिए भी सामग्री सहायक होगी।

VI. 21वीं सदी की जरूरतों का ख्याल रखते हुए छात्रों के तकनीकी कौशल के साथ-साथ भविष्य में आईसीटी कौशल आधारित सामग्री और सीखने के अनुभवों को ध्यान में रखकर भविष्य के लिए तैयार करना होगा जिसके लिए हिंदी के पाठ्यक्रम सामग्री को इस प्रकार डिजाइन करने में मदद मिलेगी।

VII. इस माध्यम से किसी भी विषय के विशेषज्ञ का राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मार्गदर्शन उपलब्ध आसानी से कराया जा सकता है अन्य पारम्परिक शिक्षण के तौर-तरीकों में सिर्फ एक स्थान पर ही किसी व्यक्ति विशेष का मार्गदर्शन मिलता था जबकि ई लर्निंग द्वारा सर्वश्रेष्ठ विशेषज्ञ का वीडियो रिकॉर्डिंग लाइव क्लासेस आसानी से ले सकते हैं।

VIII. शिक्षक अपनी शिक्षा को अधिक इंटरएक्टिव बना सकते हैं और बच्चों की विभिन्न विधियों और सीखने की शैलियों के साथ सामग्री को वितरित कर सकते हैं और समावेशी शिक्षा को इसके द्वारा प्रोत्साहन दिया जा सकता है।

IX. ई-सामग्री दूरस्थ शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा और अन्य प्रकारों के लिए भी उपयोगी है।

X. समाज के पिछड़े वर्ग और शारीरिक रूप से असक्षमो के लिए वरदान है। क्लास रूम में सीखने की आवश्यकता नहीं होने से ई-लर्निंग दूरस्थ क्षेत्रों के पिछड़े वर्ग के लिए वरदान है- कर महसूस कठिन एवं महँगी को व्यवस्था शिक्षा स्थापित वर्ग कमजोर एवं व्यक्ति आम ता है। इसके मुकाबले में ई लर्निंग सरल सुलभ के फायदे एवं उनके विकास में सहायक है।

XI. ई-सामग्री के द्वारा समय की बचत और श्रम में कमी की जा सकती है यह शिक्षण पद्धति स्कूलों के लिए फायदेमंद होगी क्योंकि अलग-अलग कक्षाओं में क्या और कितना पढ़ाया जा रहा है इसका रिकॉर्ड सॉफ्ट कॉपी में रखना शिक्षकों के लिए सुविधा प्रदान करता है।

XII. ई-लर्निंग में कोलाब्रेटिव लर्निंग को प्रधानता दी जाती है इसके अंतर्गत कई तरह के टूल्स उपलब्ध है जैसे डिक्शनरी बोर्ड,एलवीसी, चैट इन में शिक्षक मार्गदर्शक समूह वार्तालाप से एक दूसरे से लाभान्वित होते हैं

5.5 सुझाव

I. साइकोमोटर एवं संज्ञानात्मक को ध्यान में रखते हुए विभिन्न वर्गो,नमूनों एवं स्तरों का अध्ययन किया जा सकता है।

II. उपलब्धि के संदर्भ में अधिगम के विभिन्न तरीकों की तुलना करने के लिए अध्ययन किया जा सकता है।

III. विभिन्न एजेंसियों द्वारा विकसित इस सामग्री की प्रभावशीलता का अध्ययन किया जा सकता है।

IV. लिंग को ध्यान में रखकर अधिगम शैली को प्रभावित करने वाले कारकों पर भी अध्ययन किया जा सकता है।

V. यदि इ-सामग्री की कोई वीडियो अधिक समय वाली है तो इसके लिए आवश्यक है कि उसे 10 से 15 मिनट तक का कर दिया जाए।

VI. समावेशी शिक्षा में संज्ञानात्मक के संदर्भ में इस दृष्टिकोण की प्रभावशीलता का अध्ययन किया जा सकता है।

VII. अधिक सटीक परिणामों को प्राप्त करने के लिए जनसंख्या आकार को बढ़ाकर अध्ययन किया जा सकता है।

VIII. इस अध्ययन को ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के स्कूलों में तुलनात्मक दृष्टिकोण अपना कर शोध किया जा सकता है।

IX. ई-सामग्री के उपयोग के बारे में विभिन्न विषयों को पढ़ाने में शिक्षकों की अवधारणाओं पर शोध किया जा सकता है।

X. विभिन्न स्थानों को लेकर शोध अध्ययन किया जा सकता है।

XI. हिंदी विषय के अलावा अन्य विषयों में अधिगम उपलब्धि का विश्लेषण करने के लिए इस अध्ययन का उपयोग किया जा सकता है।

XII. ग्रामीण एवं आदिवासी क्षेत्रों में इस अध्ययन को प्रकाशित करने में क्या-क्या समस्याएं आ सकती हैं इसके लिए अध्ययन किया जा सकता है।